विक्रम संवाद

पाक्षिक आलेख सेवा/नि:शुल्क वितरण के लिए

सम्पादक

महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ

बिड़ला भवन, देवास रोड, उज्जैन-456010

फोन : 0734-2521499, 0755-2660407

Email : mvspujjain@gmail.com
vikramadityashodhpeeth@gmail.com

Web : www.mvspujjain.com

सम्राट विक्रमादित्य और अयोध्या

राजेश्वर त्रिवेदी

वेद में अयोध्या को ईश्वर का नगर बताया गया है, 'अष्टचक्रा ववदद्वारा देवाना पूरयोध्या' और इसकी सम्यन्त्रता की तुलना स्वर्ग से की गई है। स्कन्दपुराण के अनुसार सरयू के तट पर दिव्य शोभा से युक्त दूसरी अमरावती के समान अयोध्या नगरी है। यह उस तेजधारी राजवंश का निवास स्थान था जो सूर्यदेव से उत्पन्न हुआ और जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र का अवतार हुआ। अयोध्या मूल रूप से मंदिरों का नगर था। सम्राट विक्रमादित्य भारतवर्ष के अतीत के सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय पुरुष है। भारतवर्ष के महाकाव्यों में रामायण और महाभारत के महान नायकों–राम और कृष्ण के अतिरिक्त कोई भी दूसरा व्यक्ति उज्जयिनी के सम्राट विक्रमादित्य के समान जन–साधारण में समाहत और स्मृत नहीं है। उनका आदर्श शासन, उनका अनुपम न्याय, विवेक तथा साहित्य एवं कला के प्रश्रय में उनकी उदार हृदयता ने उनके नाम को अमर बनाकर देश के जनमानस में प्रतिष्ठित कर दिया है। विक्रमादित्य भारत के गौरव, उत्कर्ष, धर्म, त्याग, वैभव और ज्ञान के प्रतीक है।

प्रबन्धकोश के अनुसार अपने राज्य को राम राज्य बनाने की अभिलाषा में सम्राट विक्रमादित्य ने अपने राज्य में स्थान–स्थान पर अनेक मंदिर बनवाए थे और राम के चरण पादुका के अन्वेषण में उन्होंने अयोध्या में उत्खनन करवाया था। उजाड़ अयोध्या का पता लगाना कठिन था और जब सम्राट विक्रमादित्य ने इसका जीर्णोद्धार करना चाहा तो उसकी सीमा निश्चित करना दुस्तर हो गया। लोग इतना ही जानते थे कि यह नगर कहीं सरयू तट पर बसा हुआ था और उसका स्थान निश्चय करने में सम्राट विक्रमादित्य का मुख्य सूचक नागेश्वरनाथ का मन्दिर था जिसका उल्लेख प्राचीन पुस्तकों में मिला। सम्राट विक्रमादित्य के साथ कई पौराणिक कथाएँ भी जोड़ दी गयी हैं, किन्तु यहाँ इतना ही उल्लेखित करना पर्याप्त है कि उसके द्वारा ही यहाँ एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया गया। ईसा से लगभग एक सदी पहले का यह प्रसंग है। कहते हैं कि भगवान श्रीराम के जल समाधि लेने के पश्चात अयोध्या कुछ

काल के लिए उजड़ गई थी, लेकिन उनकी जन्मभूमि पर बना महल वैसे का वैसा ही था। भगवान श्रीराम के पुत्र कुश ने एक बार पुनः राजधानी अयोध्या का पुनर्निर्माण कराया। इस निर्माण के बाद सूर्यवंश की अगली चौवालिस पीढ़ियों तक इसका अस्तित्व आखिरी राजा, महाराजा बृहद्बल तक अपने चरम पर रहा। कौशलराज बृहद्बल की मृत्यु महाभारत युद्ध में अभिमन्यु के हाथी हुई थी। महाभारत के युद्ध के बाद अयोध्या उजड़ गई, मगर श्रीराम जन्मभूमि का अस्तित्व फिर भी बना रहा।

सम्राट विक्रमादित्य के बाद के राजाओं ने समय–समय पर इस मंदिर की देख–रेख की। अनेक अभिलेखों से ज्ञात होता है कि गुप्तवंशीय चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय और तत्पश्चात काफी समय तक अयोध्या गुप्त साम्राज्य की राजधानी थी। महाकवि कालिदास ने अपने काव्य रघुवंश के सर्ग सोलह में सम्राट विक्रमादित्य के उज्जैन से अयोध्या पहुँचने का वर्णन किया है। जहाँ इस बात का भी उल्लेख है कि सम्राट विक्रमादित्य ने इस यात्रा में विंध्याचल को पार किया था। अ व ध ा गजेटियर में सम्राट विक्रमादित्य के राज्यकाल की एक और जनश्रुति का उल्लेख है। वह यह है कि सम्राट विक्रमादित्य ने अयोध्या पर अस्सी वर्ष तक राज्य किया। श्रीराम जन्म स्थान पर कसौटी पत्थर के 84 स्तम्भों और सात कलश वाला मंदिर सम्राट विक्रमादित्य ने बनवाया था। जिसे 1528 ई. में बाबर के सेनापति मीर बांकी ने ध्वस्त कर दिया था। जिस पर अब भव्य राम मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ है। इसके साथ ही सम्राट विक्रमादित्य ने अयोध्या में दो सौ चालीस नए मंदिरों का तथा साठ प्राचीन मंदिरों का पुनर्निर्माण करवाया था।

दरअसल, यह कोई कपोल कल्पित बात नहीं है, बल्कि भारत की सर्वोच्च न्यायालय में दी गई तथ्यात्मक दलील का भाग है जिसे न्यायालय द्वारा मान्यता दी गई है। इसका विस्तार से उल्लेख गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'अयोध्या दर्शन' में भी मिलता है। यह मंदिर काल के कई रूपों को बर्दाश्त करता हुआ अपने स्थान पर अडिग और अचल खड़ा है। सम्राट विक्रमादित्य ने जब अयोध्या की पुनः खोज की तो सबसे पहले इसी स्थान का पता लगा। अयोध्या का प्राचीन इतिहास बतलाता है कि वर्तमान अयोध्या सम्राट विक्रमादित्य की बसायी है। सम्राट विक्रमादित्य देशाटन करते हुए संयोगवश यहाँ सरयू किनारे पहुँचे थे और यहाँ उनकी सेना ने शिविर डाला था। उस समय यहाँ वन था। कोई प्राचीन तीर्थ–चिह्न नहीं था।

भारत की संस्कृति और धर्म से प्रेम करने वाले इस प्रजावत्सल सम्राट विक्रमादित्य के हृदय में राम और राम की नगरी के प्रति श्रद्धा भाव उमड़ने लगा। सम्राट विक्रमादित्य ने वीरान पड़ी अयोध्या नगरी से भी संवाद स्थापित किया। प्राचीन ग्रंथें के मुताबिक सम्राट विक्रमादित्य का मुख्य सूचक नागेश्वरनाथ मंदिर था। कहा जाता है कि नागेश्वर नाथ मंदिर को भगवान राम के पुत्र कुश ने बनवाया था। यही एकमात्र मंदिर है जो सम्राट विक्रमादित्य के काल के पहले का है। कालांतर में औरंगजेब ने नागेश्वर मंदिर के निकटस्थ अहिल्याबाई घाट पर स्थित श्रीत्रेतानाथ के मंदिर को ध्वस्त कर उस स्थान पर विशाल मस्जिद खड़ी कर दी, जो आज भी टूटी–फूटी अवस्था में खड़ी है। इस सम्बन्ध में हैमिल्टन नामक विद्वान ने अपनी पुस्तक 'वॉकिंग ऑफ द वर्ल्ड' में लिखा है ''मुसलमान शासनकाल में अयोध्या के प्रसिद्ध नागेश्वरनाथ के मंदिर को गिराकर वहाँ मस्जिद खड़ी करने के विचार से दो बार आक्रमण किये गये, मगर वे नाकामयाब रहे।''

अयोध्या के इस अत्यंत प्राचीन शिव मंदिर के सम्बन्ध में पाश्चात्य इतिहासकार रैमिन्टन, कनिंघम, जार्ज विलियम रेनॉल्ड्स, विसेंट स्मिथ, मैक्स मूलट, बेवर, लूथर, वूलर, हण्ट, सिटनी, हिटमैन, बिल्फ्रेड, एच. इलियेट, सर जॉन फ्रांकिक के अतिरिक्त भारतीय विद्वान श्री भंडारकर ने बहुमूल्य ऐतिहासिक तथ्य, संस्मरण एवं जानकारी पूर्ण उद्गार प्रस्तुत किये हैं। सम्राट विक्रमादित्य द्वारा उत्खनित तथा पुनर्निमित नागेश्वरनाथ मंदिर के इतिहास एवं गौरवशाली अतीत के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती हैं। 'लोमस' रामायण के अनुसार सम्राट विक्रमादित्य द्वारा लक्ष्मण घाट के पास एक टीले का उत्खनन प्रारंभ हुआ। खुदाई में महाराज कुश द्वारा निर्मित रामजन्म भूमि मंदिर के अवशेषों में 84 दुर्लभ कसौटी के पत्थर भी प्राप्त हुए। वे भूगर्भ में समाये हुए थे। कुछ ही वर्षों में उन्हीं कसौटी के पत्थरों के स्तम्भों पर पुनः गौरवशाली रामजन्म भूमि मंदिर खड़ा हो गया। कहा जाता है कि उस समय वह मंदिर 600 एकड़ भूमि के विस्तृत मैदान में फैला हुआ था। उसमें बड़े सुंदर मनोहाटी उद्यान थे। बड़े–बड़े विशाल कूप थे और वहाँ अनेक मंदिर खड़े किये गये। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा किये गये उत्खनन में वहाँ हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियाँ, प्रतीक और स्तम्भ प्राप्त हुए हैं, जिसके आधार पर वहाँ एक भव्य मंदिर था, इस बात की पुष्टि हुई है। अयोध्या राजवंश के पराभव के बाद यहाँ का कनक भवन भी जर्जर होकर ढह गया। सोने का यह महल माता कैकयी ने सीताजी को मुँह दिखाई में दिया था। यह श्रीराम–जानकी का विहारस्थल है। सम्राट विक्रमादित्य ने 57 ई.पू. में कनक भवन का पुनर्निर्माण कराया। उसे लगभग 11वीं शती ई. में यवनों ने ध्वस्त कर दिया था। श्रीराम जन्मस्थान के पास रत्न मंडप ही रत्न सिंहासन मंदिर है। यहाँ के भगवान श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ था। कनक भवन के से निकट यह दक्षिण में है। यहाँ सम्राट विक्रमादित्यकालीन तीन मूर्तियाँ हैं।

मथुरा के समान अयोध्या भी आक्रमणकारियों का बार–बार आखेट होती रही है। बार–बार आततायियों ने इस पावन पुरी को ध्वस्त किया। इस प्रकार अब अयोध्या में प्राचीनता के नाम पर केवल भूमि और सरयू ही बच रही हैं। अवश्य ही अगवल्लीला–स्थली के स्थान वे ही हैं इस महान पावन पुरी को पुनर्निमित कर भगवान श्रीराम के प्रति सम्राट विक्रमादित्य ने अपनी श्रद्धा और आस्था को प्रकट किया। उज्जयिनी के महाकाल से अयोध्या तक विक्रमादित्य ने भारतीय सनातनता और भागवत धर्म को प्रतिष्ठित किया है।